24 / 02 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

दिलाराम बाप के साथ
मिलन की अनुभूति

➢➢ मैं बापदादा की दिलरुबा बच्ची स्वयं को मधुबन के डायमंड हॉल में देख रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं अपने दिलाराम बाप के पास बैठी हूँ।

→ दया और प्यार के सागर से मिलन मना रही हूँ।

◆ मैं बापदादा की विशेष में भी विशेष बच्ची हूँ।

● बापदादा मुझे दृष्टि दे रहे है।

➳ _ ➳ आकारी रूप में मिलन मनाते भी...

→ साकार रूप में मिलन मनाने की...

◆ मेरी शुभ आशा आज पूरी हो रही है।

● मेरे उमंग उल्लास को देख बाप भी हर्षित हो रहे है

➢➢ दिन रात मिलन मनाने का जो संकल्प मन मे ले कर चल रही थी

➳ _ ➳ आज वह साकार हो रहा है।

→ आज बापदादा मुरली चलाने नही

→ मेरे मिलने के संकल्प को पूरा करने

◆ मेरे पास आये है।

→ बापदादा से दिल भर के मिलने की

◆ मेरी चाहना आज पूरी हो रही है।

● बहुत ही मीठा मिलन है।

➳ _ ➳ बापदादा साकार सृष्टि में साकार तन द्वारा मुझसे मिल रहे है।

→ 5 हजार वर्ष के बिछड़े मिल रहे है

◆ नयनो में अश्रुधार है

➢➢ आज ऐसा लग रहा है जैसे 5 हजार वर्षों का इकट्ठा प्यार

➳ _ ➳ मुझे प्यार के सागर से मिल गया।

→ मैं प्यार के सागर में गहरे डूबती जा रही हूँ।

→ परमात्म प्यार से सरोबार होती जा रही हूँ।

◆ मैं बापदादा की विशेष में भी विशेष बच्ची बन गयी हूँ।

➳ _ ➳ मेरा हर संकल्प बापदादा के पास पहुंच रहा है।

→ बापदादा भी मेरे हर संकल्प का रेस्पांड दे रहे है

◆ बापदादा मेरा गुणगान भी कर रहे है।

➳ _ ➳ माया के प्रभाव से परे हर विघ्न को लगन से पार करने वाली मैं विशेष आत्मा बन गयी हूँ।

→ विघ्न में भी मेरे ऐसे लगन रूप को देख कर बापदादा भी खुश हो रहे है।

→ मेरी लगन और दृढ़ संकल्प को देख बाप भी हर्षित हो रहे है।

→ मेरी शुभ भावना, लगन, और दृढ़ संकल्प के लिए

→ मुझे मुबारक दे रहे है।

◆ मैं बाप की अधिकारी आत्मा

◆ बाप की पद्म गुना मदद की अधिकारी बन गयी हूँ।

● एक बल एक भरोसा बाप से सर्व सम्बन्धो की अनुभूति करा रही है।

● उड़ती कला का अनुभव करा रही है।

➳ _ ➳ मैं बन्धनों से मुक्त, जीवन मुक्त स्थिति का अनुभव कर रही हूँ।

→ श्रेष्ठ गायन योग्य और पूजनीय बनती जा रही हूँ।

→ मैं विशेष आत्मा बन हर विशेष कार्य को सफलतापूर्वक करती जा रही हूँ।

◆ अल्लाह के बगीचे की रूहे गुलाब बन गयी हूँ।